

चौरसा पुं. (देश.) 1. ठाकुर जी की शय्या की चद्दर 2. चार रुपये भर का बाट। **वि.** जिसमें चार रस हो, चार रसों वाला।

चौरा पुं. (देश.) 1. चौतरा, चबूतरा, वेदी 2. किसी देवी-देवता आदि का स्थान जहाँ चबूतरा बना रहता है 3. लोबिया 4. वह बैल जिसकी पूँछ सफेद हो। **स्त्री.** गायत्री का एक नाम।

चौराई स्त्री. (देश.) 1. चौलाई नाम का साग 2. एक चिड़िया।

चौरानवे वि. (तद्.) नब्बे से चार अधिक। **पुं.** नब्बे से चार अधिक की संख्या जो अंकों में इस प्रकार की लिखी जाती है- 94।

चौराष्टक पुं. (तत्.) षाड़व जाति का एक संकर राग जो प्रातःकाल गाया जाता है।

चौरासी वि. (तद्.) अस्सी से चार अधिक **पुं.** 1. अस्सी से चार अधिक की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है -84 2. चौरासी लाख योनि टि. पुराणों के अनुसार जीव चौरासी लाख प्रकार के माने जाते हैं।

चौराहा पुं. (देश.+फा.) वह स्थान जहाँ चार रास्ते या सड़कें मिलती हों।

चौरी स्त्री. (तत्.) 1. छोटा चबूतरा, वेदी 2. किसी देवी-देवता आदि के लिए बनाया गया छोटा चौरा या चबूतरा, जिस पर छोटा स्तूप जैसा बना होता है 3. चोरी 4. गायत्री का एक नाम।

चौर्य पुं. (तत्.) 1. चोरी, स्तेय 2. चोरी करने वाला।

चौलाई स्त्री. (देश.) एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।

चौलिक पुं. (तत्.) कपड़े का टुकड़ा।

चौवन पुं. (तद्.) पचास से चार अधिक की संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है- 54।

चौवा पुं. (तद्.) 1. हाथ की चार उँगलियों का समूह 2. हाथ की उँगलियों का विस्तार, चार अंगुल की माप।

चौसर पुं. (तद्.) एक प्रकार का खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार गोटियों और तीन पासों से दो मनुष्यों में खेला जाता है, चौपड़।

चौहत्तर पुं. (तद्.) तिहत्तर के बाद की संख्या, सत्तर से चार अधिक की संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है- 74।

चौहद्दी स्त्री. (तद्.+फा.) चारों ओर की सीमा।

चौहरा वि. (तद्.) जिसमें चार फेरे या तहें हों, चार परत वाला।

चौहान पुं. (देश.) अग्निकुल के अंतर्गत क्षत्रियों की शाखा। भारत के प्रसिद्ध अंतिम सम्राट पृथ्वीराज इसी चौहान जाति के थे।

च्यवन पुं. (तत्.) 1. चूना, झरना, टपकना 2. एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश पुं. (तत्.) आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध अवलेह जिसके विषय में कहा जाता है कि ऋषि का वृद्धत्व और अंधत्व नाश करने के लिए अश्विनी कुमारों ने इसे बनाया था टि. इस अवलेह से स्वर भंग, यक्ष्मा, शुक्र दोष आदि दूर होते हैं और स्मृति, कांति, इंद्रिय सामर्थ्य, बल वीर्य आदि की वृद्धि होती है।

च्युत वि. (तत्.) 1. टपका हुआ, गिरा हुआ, झड़ा हुआ 2. गिरा हुआ, पतित 3. भ्रष्ट 4. अपने स्थान से हटा हुआ 5. विमुख, पराङ्मुख।

च्युति स्त्री. (तत्.) 1. पतन, स्थलन, झड़ना, गिरना 2. गति, उपयुक्त स्थान से हटना 3. चूक, कर्तव्य-विमुखता 4. अभाव, कसर 5. गुदाद्वार, गुदा 6. भग, योनि।

च्युतसंस्कारता स्त्री. (तत्.) साहित्य दर्पण के मत से काव्य का वह दोष जो व्याकरणविरुद्ध पद-विन्यास से होता है, काव्य का व्याकरण संबंधी दोष।

च्युप पुं. (तत्.) मुख, चेहरा।

च्यूत पुं. (तत्.) आम का पेड़ या फल।